हर दिन उपयोग में आने वाले व्यावहारिक सुझाव

बदी शम्स

यह और अधिक स्पष्ट होता जा रहा है कि वर्तमान अर्थव्यवस्था मरती जा रही है और मानवता की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती। धनी और निर्धन के बीच की दूरी चौड़ी और चौड़ी होती जा रही है जिसने जनसमूहों के कष्ट को बढ़ा दिया है। समाधान जो इनका इलाज हैं उन्हें नकारा गया है। यह भिन्न प्रकार के तरीकों को आजमाने का समय है। हमको मालूम है कि बहाई अर्थव्यवस्था तभी आयेगी जब मनुष्य और समाज का रूपांतरण पूर्णतः हो गया होगा और इसके साथ ही मनुष्य अपने आध्यात्मिक स्थान और अपनी नियति के प्रति जागरूक होगा। तब वह अपनी पाशविक प्रकृति को अपने वश में कर चुका होगा और इसलिए अपेक्षाकृत स्वार्थपूर्ण व्यवहार करेगा। इस समय उस सीमा तक आध्यात्मिक रूप से विकसित हो चुकी एक समाज की कल्पना कर पाना पूरी तरह असंभव है। चूंकि अभी तक हमारे पास इसका स्थान लेने के लिए बहाई आर्थिक प्रणाली नहीं है, हम ऐसा सोच सकते हैं कि हम इसे स्थापित करने के लिए कुछ नहीं कर सकते और हमको इसके आने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। लेकिन अपने आर्थिक जीवन में अधिकाधिक आध्यात्मिक गुणों का सावेश करके हम ऐसी प्रणाली की नींव का निर्माण कर रहे हैं।

अब्दुल बहा अर्थशास्त्र की प्रकृति और इसकी समस्याओं की व्याख्या करते हुए लिखते हैं –

समग्र अर्थशास्त्रीय प्रश्न के रहस्य अपनी प्रकृति में दिव्य हैं और हृदय और चेतना के संसार से संबंधित हैं। बहाई शिक्षाओं में यह सर्वाधिक पूर्णता से वर्णित हैं और बहाई शिक्षाओं को ध्यान में रखे बिना, बेहतर स्थिति को प्राप्त करना असंभव है।[1]

शोगी एफेंदी इस कथन पर और अधिक प्रकाश डालते हैं :

...आर्थिक समाधान की प्रकृति दिव्य है इस कथन का अर्थ यह है कि धर्म ही अकेला अंतिम उपाय है जो मनुष्य के स्वभाव में मूलभूत परिवर्तन ला सकता है जो उसे समाज के आर्थिक व्यवहार में ताल–मेल बैठाने में समर्थ बना सकता है। सिर्फ यही एकमात्र रास्ता है जिससे मनुष्य आर्थिक शक्तियों को नियंत्रित कर सकता है जो उसके अस्तित्व के आधार को विघटित करने की धमकी दे रही हैं और इस प्रकार प्रकृति की शक्तियों पर उसके प्रभुत्व को बलपूर्वक निश्चित करती है।[2]

आर्थिक मामलों में हमारी प्रतिभागिता बाकी दुनियावालों के लिए एक उदाहरण स्थापित करेगी जब विश्व राष्ट्र मंडल के अस्तित्व में आने के लिए आधार का निर्माण करेगी। विश्व न्याय मंदिर हमें याद दिलाते हैं कि हमारे वित्तीय कार्यों को हमारे आध्यात्मिक विश्वासों को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

हालाँकि, कुछ कार्य हैं जिनसे एक बहाई को दूर रहना चाहिये जैसे अपने लेन–देन में बेईमानी, या दूसरों का आर्थिक शोषण। दिव्य उपदेशों में दृढ़ रहने के लिए एक शर्त है, एक बहाई के रूप में वित्तीय व्यवहार और अपने विश्वासों के बीच विरोध नहीं होना चाहिए।

सदाचार और निष्पक्षता से संबंधित प्रभुधर्म के सिद्धांतों को अपने जीवन पर लागू कर के एक अकेली आत्मा एक ऐसे मापदण्ड को उस निम्न सीमा से अत्यधिक ऊँचा उठा सकती है जिससे संसार स्वयं को तौलता है... ।[3]

बढ़ी हुई जागरूकता के साथ वित्तीय गतिविधियों में भाग लेने के लिए आपको प्रोत्साहित करने के विचार से निम्नलिखित सुझावों को पारदर्शी और सुस्पष्ट रखने की कोशिश की गई है। ये हर किसी के लिए है चाहे आप अर्थशास्त्र का ज्ञान रखते हों या नहीं। आशा है आप इन सलाहों को उपयोगी पायेंगे और ये आपको कार्य करने के लिए सशक्त करेंगी और यह महसूस करने में सहायता करेंगी। हम बहाइयों के पास समाज को रूपांतरित करने और मौलिक परिवर्तन लाने की कितनी अद्‌भुत शक्ति है जैसा कि प्रिय धर्मसंरक्षक ने कहा है :

- जीवन के महत्वपूर्ण प्रश्नों पर केंद्रित रहें, जैसे "मैं कौन हूँ", 'मेरे जीवन का उद्‌देश्य क्या है" और "कितना काफी है।"
- अब्दुल बहा की भाँति एक सरल जीवन जीयें।
- किसी उत्पाद के लिए झूठ नहीं बोलें।
- सही मूल्य दें, भले ही वह बाजार मूल्य से अधिक हो।
- कर्मचारियों के साथ लाभ बाँटें, चिकित्सा राशि, सुरक्षा प्रदान करें और सही मजदूरी दें।
- अपने लेन–देन में ईमानदारी बरतें।
- सर्वोत्तम सेवा प्रदान करें।
- सहकर्मियों एवं प्रतिद्वंदियों को मदद देने के अवसर की प्रतीक्षा में रहें।
- यथोचित लाभ से संतुष्ट रहें।
- अपने क्षेत्र की नवीनतम सूचनाओं को प्राप्त करते रहें।
- व्यवसाय से संबंधित या अन्य बैठकों में भी संयम बरतें।
- उधार देते समय दी गई धनराशि पर उचित ब्याज ही लें।
- उपभोक्ता मानसिकता से बचें।
- विज्ञापनकारिता के विषय में ज्ञान रखें और पंक्तियों के मध्य लिखित विवरणों को पढ़ें।
- कार्य–स्थल पर बर्बादी से बचें।

- वातावरण की सुरक्षा करें।
- अपने वित्तीय और व्यावसायिक ज्ञान में बढ़ोत्तरी करते रहें।
- जब भी संभव हो सेवाभाव से अपना योगदान दें
- बहाई–कोष में दान दें।
- जीवन में एक वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करें।
- कर्ज लेने से बचें।
- बचत करने की आदत डालें।
- ईमानदार और निष्पक्ष व्यवसायों एवं व्यवसायियों के विषय में लोगों को बताये।
- यदि पुरानी चीजें कार्य करने की स्थिति में हों तो उनके नये नमूने न खरीदें।
- दिखावे के लिए भौतिक चीजों को एकत्रित करने से बचें।
- एक विश्व मुद्रा की अवधारणा को बढ़ावा दें।
- कर देने के मामले में समाज के छोटे रास्तों का उपयोग न करें।
- ईमानदारी से सही बीमा दावों को करें।
- कार्य में सही खर्चों के दावे करें।
- रोग–अवकाशों का दुरपयोग न करें।
- जब भी आपको उचित से कम या अधिक राशि मिले तो सूचित करें।
- समाज के भ्रष्ट अभ्यासों से बचें।
- सेवा को प्रथम और लाभ को दूसरा स्थान दें।
- कार्य के अंत में उपयोग किये साधनों को सही ठहराने को बढ़ावा नहीं दें।
- सामाजिक और वित्तीय योजनाओं में भाग लें।
- नौकरी के लिये दिये साक्षात्कारों में ईमानदारी बरतें।
- निविदा के फार्मों को भरने में सच्चाई बरतें।
- पदोन्नति या ठेका प्राप्त करने के लिए अपने मूल्यों की अनदेखी न करें।
- अपने उत्पादों में उत्तम श्रेणी के माल का उपयोग करें और किसी भी हानिकारक वस्तु के उपयोग से बचें।
- निर्धनों एवं दलितों की सुरक्षा करें।
- बाँटने की भावना से दें न कि खोने के भाव से।

- ऐसी समझ का निर्माण करें कि आपका कल्याण, खुशहाली ओर आपकी प्रसन्नता संसार के प्रत्येक निर्धन और जरूरतमंद के कल्याण, खुशहाली और प्रसन्नता पर निर्भर करती है।
- उतनी ही अधिक उर्जा उन भौतिक संपत्ति से अनासक्त होने में लगायें जितनी अधिक उर्जा आप उन्हें हासिल करने में लगाते हैं।
- वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश करते समय स्वयं को अपनी आध्यात्मिक गंतव्य की याद दिलाते रहें।
- बहाई जीवन जीयें।
- जो आपसे लेते हैं उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखें।
- सद्‌गुणों को व्यवहार में रखें।
- अपने आग्रही प्रवृति और अहं को नियंत्रण में रखें।
- सामाजिक विषयों पर बोलते समय प्रेमपूर्ण ढंग से बोलें।

ये विचार मेरी पुस्तक 'इकॉनौमिकस ऑफ द फयूचर विगिन्स टुडे' के एक चैप्टर का संक्षिप्तिकरण है। आप इन सुझावों के विषय में क्या सोचते हैं ? क्या ये व्यावहारिक हैं ? क्या आपने इनमें से किसी का अपने व्यवहार में समावेश किया है ? वे अत्यधिक कठिन लग सकते हैं और आप अपने जीवन की परिस्थिति में लोग हो सकने वाले सभी को व्यवहार में लाने में स्वयं को समर्थ नहीं पा सकते हैं। लेकिन आपको यह याद रखना है कि यह परिणामों से संबंधित नहीं है, बल्कि यह निष्ठापूर्वक पूरे ह्रदय से किये गये प्रयासों से संबंधित हैं। पवित्र नियत ही है जो मायने रखती है।

1. अब्दुल बहा, बहाई वर्ल्ड, वॉल्यूम चार, पृ.448
2. शोगी एफेंदी द्वारा व्यक्तिगत बहाई को लिखे गये एक पत्र से, दिसंबर, 26, 1935, मार्गदर्शन का प्रकाश
3. विश्व न्याय मंदिर, रिज़वान संदेश 2012